

Q

What is hypothesis? Describe the difference between hypothesis and problem?

Ans: → वैज्ञानिक ढंग से शोध का प्रारंभ समस्या कथन के साथ साथ परिकल्पनाओं के निर्माण से होता है। हर शोध का प्रारंभ परिकल्पनाओं से होता है। और अन्त-भी परिकल्पना से होता है। Psychological research का प्रारंभ एक ~~प्रश्न~~ के साथ Problem के साथ होता है। और problem के formation के बाद शोधकर्ता को शोध के परिकल्पना का निर्माण करना पड़ता है। परिकल्पना को statement कहें जाते हैं जिसमें शोध के समस्या में निहित चरों के बीच वर्तमान संबंधों की उपकल्पना की जाती है। तब Kerlinger (1975) ने इसकी परिभाषा देते हुए बताया है कि "A hypothesis is a testable statement of a potential relationship between two or more variable."

वास्तव में hypothesis एक प्रकार का ऐसा कथन होता है। जिसकी जाँच की जा सकती है और कथन को शोध के आधार पर सत्य या असत्य घोषित किया जाता है। Good and Moh ने कहा है कि "A hypothesis is proposition which can be put to test to determine its validity." अर्थात् परिकल्पना एक ऐसा प्रस्तावित कथन है जिसकी वैधता को निर्धारण करने के लिए जाँच की जाती है।

इस प्रकार hypothesis का अर्थ स्पष्ट करते हुए Webster ने कहा है कि "Hypothesis is a proposition condition or



Principle which is assumed perhaps without deep belief in order to draw out its logical consequences and by this method to test words with just which are known or may be determined" :-

उपर्युक्त परिभाषाओं से होता स्फुट होता है कि परिकल्पना किसी भी शोध कार्य सम्बन्धित - चरों के बीच सम्भावित संबंधों का एक ठोस तथा अनुमान है। जिसकी जाँच की जाती है। वास्तव में परिकल्पना का उद्देश्य ही शोधकर्ता की एक दिशा प्रदान करना होता है। जिस दिशा की ओर शोधकर्ता अपने अध्ययन में इस बात की प्रत्यास करता है कि अध्ययन में निहित - चर के बीच में सम्भावित संबंध कहां तक बढ़ता है। इस संबंध में Kerlinger ने ब्रीफ ही कहा है कि "Through constructed by man

probability hypothesis must can be shown to be probability correct or incorrect a part from man's value and opinion.

तथा हमें यी जानना पड़ती है जाता है कि समस्या क्या है तो इसके संबंध में कहा जा सकता है कि विज्ञान के अन्तर्गत किसी भी अनुसंधान में शोधकर्ता शोधकर्ता का प्रारंभ एक समस्या से होता है। तब समस्या के परिभाषा के संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने कि विभिन्न तरह से बताया है Juhn (1953) ने समस्या के परिभाषा के संबंध में बताया है कि "A problem is a question proposed for solution generally speaking a problem exists when there is no available answer to some question."



परिवर्तन के अनुसार इन दोनों प्रक्रियाओं  
 का निर्धारण 1911 कांचालक माइलर के दो  
 अलग अलग भागों द्वारा ही होता है। एक भाग  
 L.T.M से संबंधित होता है तथा दूसरा भाग  
 S.T.M से संबंधित होता है। अतः किसी एक  
 भाग के क्षतिग्रस्त होने पर उसमें संबंधित  
 अणु एक समूह क्षतिग्रस्त होती है। 1959 में  
 मैल्कर (1959) तथा मिलर (1967) की  
 आध्यात्म उत्पत्तिका है। उन्होंने एक से  
 रोगी का आध्यात्म किया। पिछले समूह का  
 वह भाग क्षतिग्रस्त हो गया था जो दीर्घकालीन  
 तथा आणविक मंडली के बीच सम्पर्क स्थापित  
 करता है। उस भाग को क्षतिग्रस्त होने पर दोनों  
 मंडली के बीच सम्पर्क समाप्त हो गया। देखा  
 गया कि उस स्थिति L.T.M पूर्व रहा। लेकिन  
 S.T.M समाप्त हो गया। इससे प्रमाणित हुआ  
 कि S.T.M तथा L.T.M दोनों भिन्न प्रक्रिया  
 हैं जो दोनों का निर्धारण एक अलग अलग  
 मूलभूत के दो भिन्न भागों द्वारा होता है।  
 इससे स्पष्ट है कि S.T.M  
 तथा L.T.M के संघर्ष में उपर्युक्त दो विधीय  
 सिद्धांत का परिवर्तन उपलब्ध है। यह  
 कहना कठिन है कि उनमें कौन सा सिद्धांत  
 श्रेष्ठ था कौन सा नहीं है। फिर भी Hulsebeck  
 तथा Egeth (1975) ने निष्कर्ष निकाला कि वे यह  
 है कि dual process hypothesis के पक्ष में  
 अधिक प्रमाण उपलब्ध है। इस आधार पर  
 ऐसा प्रतीत होता है कि single process  
 hypothesis की अपेक्षा dual process hypothesis  
 अधिक सही है।

draw out its logical consequences and by this method its test words with just which are known or may be determined" :-

पाठक  
कि  
दोना  
गहरा  
का  
०

उपरोक्त परिभाषाओं से होता

स्पष्ट होता है कि परिकल्पना किसी भी शोध कार्य से निर्यात चरों के बीच सम्बन्धित संबंधों का एक ऐसा अनुमान है। जिसकी जांच की जाती है। वास्तव में परिकल्पना का उद्देश्य ही शोधकर्ता की एक दिशा प्रदान करना होता है। जिस दिशा की ओर शोधकर्ता अपने अध्ययन में इस बात की प्रत्याशा करता है कि अध्ययन में निहित चर के बीच में सम्बन्धित संबंध कहां तक बढ़ेगा है। इस संबंध में Kerlinger ने ब्रीफ़ ही कहा है

१) शोध  
प्राप्त  
वैध  
समय  
कि  
अंशों

probability

"Through constructed by man hypothesis must can be shown to be probability correct or incorrect a part from man's value and opinion."

२) शोध  
मिथ्या  
की  
से

तब हमें ही जानना पड़ती है

जाता है कि समस्या क्या है वी इसके संबंध में कहा जा सकता है कि विज्ञान के अन्तर्गत किसी भी अनुसंधान में शोधकर्ता शोधकर्ता का प्रारंभ एक समस्या से होता है। तब समस्या के परिभाषा के संबंध में भौतिकशास्त्रियों ने निम्नलिखित तरह से बताया है John (1953) ने समस्या के परिभाषा के संबंध में बताया है कि "A problem is a question proposed for solution generally speaking a problem exists when there is no available answer to some question."

३) पर  
कि  
समाप्त  
का  
आए  
है  
प्रभावि  
क्या  
समय



अथ हमारा प्रश्न है कि समस्या और परिकल्पना में क्या अंतर है तो देखा जाता है कि शोधकर्ता के लिए समस्या तथा परिकल्पना दोनों को आवश्यकता होती है। इसलिए दोनों में गहरा संबंध है। परिकल्पना वास्तव में समस्या का प्रस्तावित उत्तर है। लेकिन इसके अतिरिक्त दोनों में काफी अंतर है। जो निम्नलिखित है।

(1) शोध समस्या अस्पष्ट तथा अनिश्चित होती है जबकि शोध परिकल्पना स्पष्ट तथा निश्चित होती है। जैसे :- कैंसर के कारणों की खोज एक समस्या है परन्तु परिकल्पना यहाँ जाती है कि कैंसर का कारण Smoking है तो यह बहुत अंशों में स्पष्ट तथा निश्चित बन जाता है।

(2) शोध समस्या में दिशा का अभाव होता है। शोधकर्ता को शोध प्राप्त करने का आधा नहीं मिलता है। जब शोधकर्ता को शोध प्राप्त करने का मिलता है तो शोध का आधा परिकल्पना से शीघ्र आसानी का अनुभव होने लगता है।

(3) शोध समस्या को अस्तित्व समाधान योग्यता पर निर्भर करता है। समस्या में इतनी क्षमता हो कि उसका समाधान हो सके। यदि उसमें समाधान की योग्यता नहीं होगी तो वह वैज्ञानिक समस्या नहीं हो सकता है। दूसरी और परिकल्पना का अस्तित्व इसके परीक्षण योग्यता पर आधारित है। परिकल्पना के लिए यह आवश्यक है कि उसे प्रमाणित किया जा सके। यदि उसमें प्रमाणित होने की योग्यता नहीं होगी तो उसे वैज्ञानिक कल्पना नहीं माना जाएगा।



यदि परिकल्पना नहीं भी होनी समस्या का  
अस्तित्व कायम रह सकता है। ऊपर के कारण  
का समाधान एक भारी समस्या गनी हुई है।  
इसके संबंधित और परिकल्पना नहीं गनी होने  
पर यह समस्या रहेगी।

⑤ किसी शीघ्र समस्या का परीक्षण वैज्ञानिक  
स्तर पर संभव नहीं है। जैसे performance में  
छास का क्या कारण है। यह एक शीघ्र समस्या  
है। परन्तु इसका वैज्ञानिक परीक्षण संभव नहीं  
है। दूसरी परिकल्पना में वैज्ञानिक परीक्षण संभव  
है। जैसे :- अकाल के कारण performance में  
छास होता है। यह एक परिकल्पना  
है। इसका परीक्षण वैज्ञानिक स्तर पर संभव है।

⑥ समस्या में अविद्यमानता का गुण नहीं पाया  
जाता है। अतः परिकल्पना में यह गुण पाया  
जाता है।

⑦ समस्या के साथ और अज्ञान के रूप में  
व्यक्त नहीं किया जा सकता है कि यह सत्य है  
या असत्य है। जैसे :- मैं किन कारणों से  
होता है यह एक समस्या है। जैसे हम न  
तो स्वीकार कर सकते हैं और न स्वीकार  
कर सकते हैं। परन्तु परिकल्पना की सत्यता  
या अस्तिभाव प्रमाणित किया जा सकता है।  
जैसे :- Smoking से कैंसर होता है। यह  
एक परिकल्पना है जिसे सत्य या असत्य  
स्वीकृत या अस्वीकृत कर देता है।

⑧ शीघ्र समस्या के विज्ञान में प्रगति नहीं  
होती है। इसके न किली विज्ञान का लंबा  
होना है। नही न खंडन होता है परन्तु

परिकल्पना। ये सिद्धांत की प्रगति होती है। प्रगति  
करने की शीघ्रता है। यह एक सागरा है। विद्यार्थियों  
विद्यार्थियों के लिए प्रगति में कोई सहायता  
नहीं मिलती है।

इससे स्पष्ट है कि शोध  
सागरा का तथा शोध परिकल्पना में  
उपस्थित कई अंतर हैं। सच तो यह है कि  
परिकल्पना के बिना सागरा का संचालन  
नहीं हो सकता है। वैसाचर Kerlinger का  
कहना है कि "A problem cannot be  
scientifically solved if it not reduced  
to hypothesis form."

